देखो गधे भाई
बर्फ पड़ रही है



ऐलेन राफेल और डॉन बोलोग्नीज़

एक सुबह जब कार्लो बाहर कुएं पर गया, तो उसे बाल्टी में बर्फ जमी हुई दिखाई दी.

"सर्दी आ गई है," उसने अपने गधे से कहा. “भाई, क्या तुमने कभी बर्फ देखी है?"

फिर उसने गधे को सर्दियों के बारे में सब कुछ बताया - कैसे बर्फ गिरती है और फिर कैसे तेज़ हवाएं चलती हैं और उसके बाद पृथ्वी ठंडी होकर जम जाती है.

फिर दोनों दोस्तों ने शलजम खोदीं और घर और खलिहान को सर्दियों के लिए तैयार किया. एक दिन, जब कार्लो जागा तो उसने देखा कि बाहर की दुनिया बर्फ की चादर से ढकी हुई थी. वो गधे को यह बताने के लिए दौड़ा हुआ गया कि सर्दी आ गई थी, लेकिन उसे अपना गधा कहीं नहीं मिला...

देखो गधे भाई
बर्फ पड़ रही है

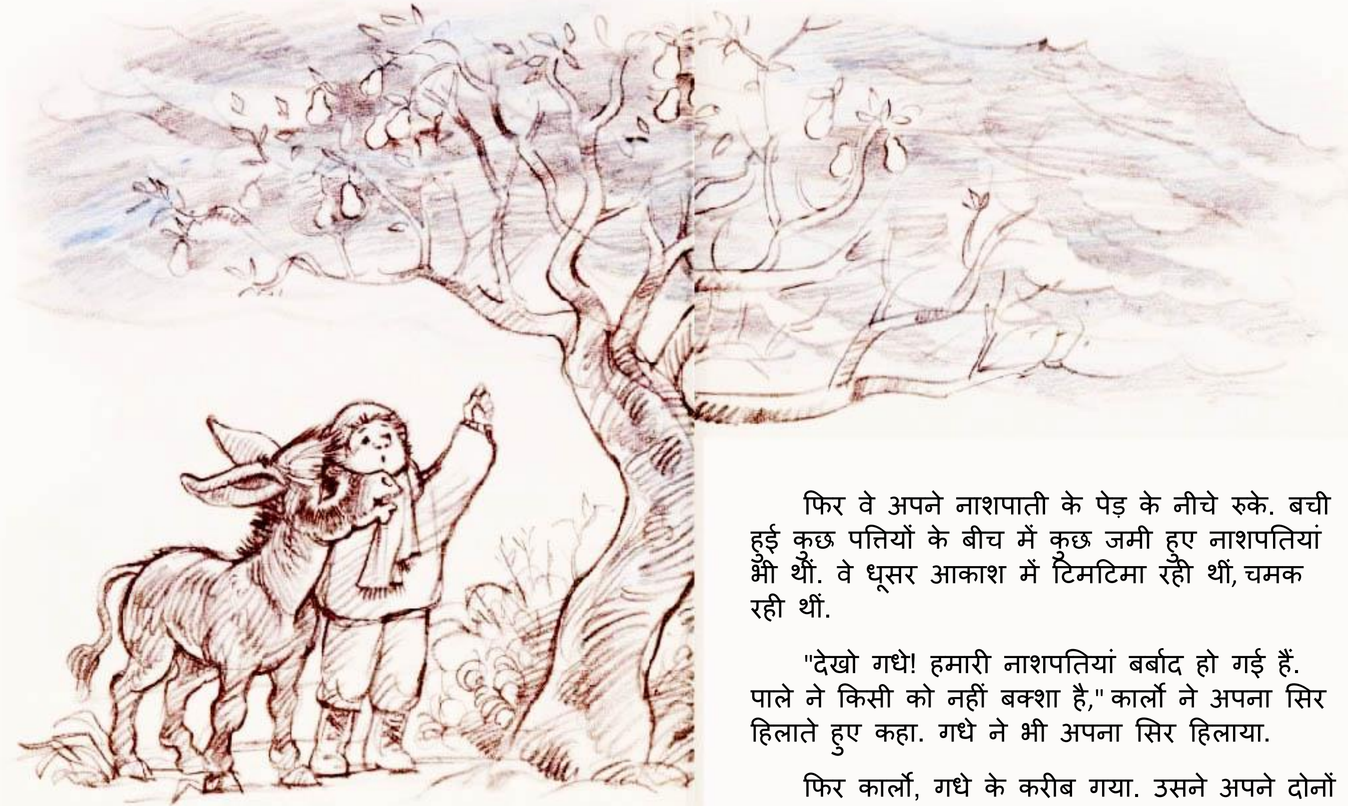


ऐलेन राफेल और डॉन बोलोग्नीज़



एक ठंडी धुंध भरी सुबह को, कार्लो अपने गधे के साथ बगीचे में गया. वहां उसने आलू खोदे. गधा कुछ भूरी घास कुतरने के लिए रुका. "गधे भाई, जल्दी आओ!" कार्लो चिल्लाया. फिर गधा बगीचे में आया. "हमारी बाल्टी में बर्फ है," कार्लो ने कहा. गधे ने बाल्टी के अंदर देखा.
वो आश्चर्यचकित रह गया.

"जरा देखो! यहाँ पर ज़मीन कितनी सख्त है." गधा देखता रहा. पहले कार्लो ने अपने पंजेनुमा औज़ार और फिर फावड़े से जमीन खोदी. गधे ने अपने खुर से ज़मीन को खरोंचा. ज़मीन वाकई में बड़ी सख्त थी.



गधा और कार्लो अपने बगीचे में घूमे. उन्होंने पाया कि आलू के पत्तों पर पाला पड़ा था, और चुकंदरों के ऊपर बर्फ जमी हुई थी.

फिर वे अपने नाशपाती के पेड़ के नीचे रुके. बची हुई कुछ पत्तियों के बीच में कुछ जमी हुए नाशपतियां भी थीं. वे धूसर आकाश में टिमटिमा रही थीं, चमक रही थीं.

"देखो गधे! हमारी नाशपतियां बर्बाद हो गई हैं. पाले ने किसी को नहीं बक्शा है," कार्लो ने अपना सिर हिलाते हुए कहा. गधे ने भी अपना सिर हिलाया.

फिर कार्लो, गधे के करीब गया. उसने अपने दोनों हाथ उसके गले में डाल दिए.

"देखो गधे! सर्दी आ गई है," उसने उदास होकर कहा. गधे ने अपने बड़े सिर से उसे धक्का दिया और फिर उसने कार्लो के चिंतित चेहरे की ओर देखा.



"हाँ गधे, सर्दी आ गई है," कार्लो ने आह भरते हुए दोहराया. फिर उसने कुछ देर सोचा. उसने आसमान की ओर देखा. बादलों की एक पतली तह ने, सूरज को छिपा लिया था.

"ज़रा उन बर्फीले बादलों को तो देखो."

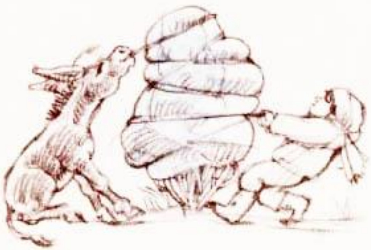
गधे ने धीरे से अपना सिर उठाया. उसने आकाश को खोजा. वहां उसे एक बाज़ दिखाई दिया. बाज़ ऊँचे और नीचे चक्कर लगाता रहा. फिर बाज़ ने नीचे गोता मारा.

गधे ने अपनी पूँछ हिलाई. उसने अपना पैर पटका.

"देखो गधे, अब खेलने का समय नहीं है," कार्लो ने ज़मीन खोदते हुए कहा. "जल्द ही बर्फ़ गिरेगी." उसने फिर शलजम और गाजरों को ज़मीन से खींचा.







पूरे दिन उन्होंने जितनी तेजी से हो पाया काम किया. वे शलजम और आलू की फसल तहखाने में; गाजर और प्याज़ को रसोई में ले गए. उन्होंने बेरी की झाड़ियों को पुरानी बोरियों से लपेट दिया. कार्लो ने खलिहान की छत में छेद को टिन से ढक दिया. फिर गधा आखिरी ताज़ा घास खलिहान में लेकर आया.

शाम होते-होते धुंधला आसमान काले बादलों से ढंक गया. ठंडी हवा नाशपातियों की टहनियों से होकर घर के चारों ओर गुनगुनाहट का शोर मचाने लगी. कार्लो ने अपने ठंडे हाथों पर गर्म साँस छोड़ी. उसके सिर के चारों ओर भाप उठी. उसने अपने औज़ार शेड में रख दिये. अंत में, वो कुछ जलाऊ लकड़ी लेकर घर में गया.



गधा बगीचे में तब तक इंतजार करता रहा जब तक उसे चिमनी से धुआं निकलते हुए नहीं दिखा. फिर वो जल्दी से रसोई के पास अपने गर्म शेड में चला गया.







"देखो, गधे, हवा ने हमारे बगीचे को पूरी तरह उलट-पुलट कर दिया है. उसने हमारा गेट तोड़ दिया है. साथ ने हवा ने जंगल से सभी पत्ते और टहनियाँ उठाकर हमारे बगीचे में पटक दिए हैं."

गधा आश्चर्यचकित रह गया.

"हवा चलते समय हम बगीचे में नहीं जाएंगे," कार्लो ने कहा, "हम घर में ही रहेंगे जो सुरक्षित और गर्म होगा. हां, मैं आज डबलरोटी बनाऊंगा."

गधे ने अपना सिर हिलाया.

अगले दिन, तेज़ हवा चली जिससे खिड़कियां हिलने लगीं. दरवाज़ों के शटर घर से टकराने लगे. उस शोर ने कार्लो को जगा दिया. उसने अपना लैंप जलाया और वो खिड़की के पास गया.

"गधे आओ और जरा तेज़ हवा को देखो," कार्लो ने पुकारा.

गधे ने सिर उठाया. उसने अपनी उनींदी आँखों से इधर-उधर देखा. फिर वो कार्लो के पास गया.





"कल बर्फ पड़ेगी," कार्लो ने आटा और पानी गूंथते हुए कहा. "बर्फ, सड़क और घास के मैदान पर उड़ेगी. बर्फ हमारे नाशपाती के पेड़ को ढक देगी, और शेड के पीछे एक बड़ा पहाड़ बना देगी." कार्लो ने आटा गूंथा. फिर उसने उत्साह से कहा, "बर्फ हमारे चारे, हमारी गाड़ी और हमारी बाल्टी को भी ढंक देगी."

गधे के कान खड़े हो गये. उसकी आँखें खुली रह गईं.

"हाँ, गधे, बर्फ हमारे पूरे बगीचे को ढक देगी!"

फिर कार्लो ने आटे को गोल रोटियों में बदला और उन्हें भट्टी में पकने के लिए रख दिया.

उस सुबह कार्लो ने डबलरोटी बनाई. आटा मापते समय उसने गधे से बातें कीं. गधा ताज़ी घास चबाता रहा. समय-समय पर वो अपने कानों को मोड़ता था.



दोपहर के समय कार्लो ने कुछ मसालेदार चुकंदर और हरी मिर्च के साथ ताजी डबलरोटी खाई. गधे ने एक कटोरी जई के साथ कुछ डबलरोटी खाई.

"तुमने कभी बर्फ नहीं देखी है, गधे," कार्लो ने खाना खत्म करने के बाद कहा. गधे ने घास चबाना बंद कर दी और सुनने लगा.

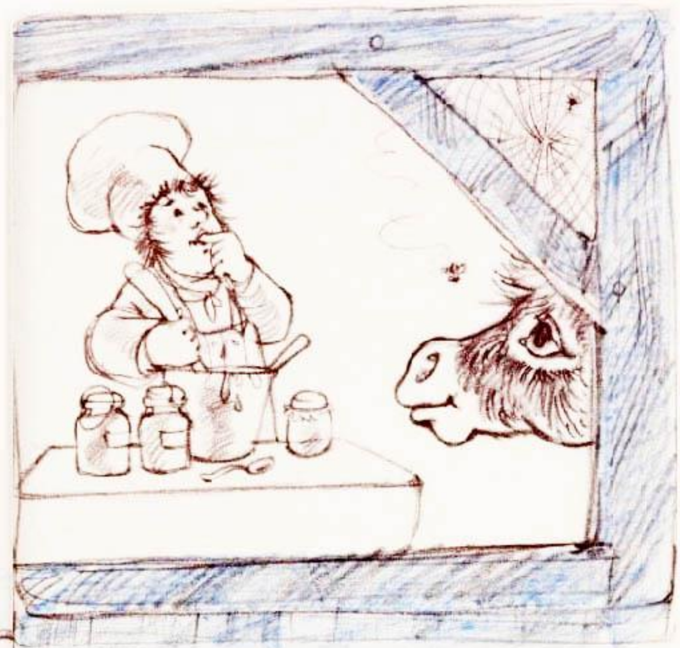
"बर्फ तुम्हारे कानों को एकदाम ठंडा कर देगी."

गधे ने अपने दोनों कान नीचे कर लिए. उसने एक को हिलाया. फिर दूसरे को.

"बर्फ तुम्हें इतना ठंडा कर देगी कि तुम सिर से लेकर पूंछ तक कांप उठोगे."

गधे ने अपनी पूँछ इधर-उधर हिलाई.





बाद में, कार्लो ने एक टूटी हुई कुर्सी ठीक की और गधे ने एक मकड़ी को अपना जाल बुनते हुए देखा. फिर कार्लो ने कुछ जेली बनाई और उसे बोतल में भरा. गधे ने अपने कमरे के आसपास एक मक्खी को भिनभिनाते हुए देखा.



गधे ने अपना सिर खलिहान के दरवाजे पर टिकाया. गधा बर्फ के बारे में सोचने लगा. जल्द ही उसकी आँखें बंद हो गईं. परन्तु अभी भी उसके कान सुन रहे थे. दूर से उसे एक उल्लू की आवाज के साथ कुछ और सुनाई पड़ा. पहाड़ी के ऊपर एक लोमड़ी चीख रही थी. आख़िर में गधा जंगल के देवदार पेड़ों की फुसफुसाहट के बीच सो गया.

शाम तक कार्लो थक गया था. उसने अपने कपड़े उतारे और बिस्तर में लेट गया. उसने फूंक मारकर लैंप बुझाया और रजाई अपनी ठुड्डी तक खींची.

"गधे, बर्फ गिरने पर हम बगीचे में नहीं जा सकते हैं. तब हम उस घर में ही रहेंगे जहां सुरक्षा और गर्मी है. मैं एक सेब का केक बनाऊंगा. फिर हम पूरे दिन खा सकते हैं और बातें कर सकते हैं."

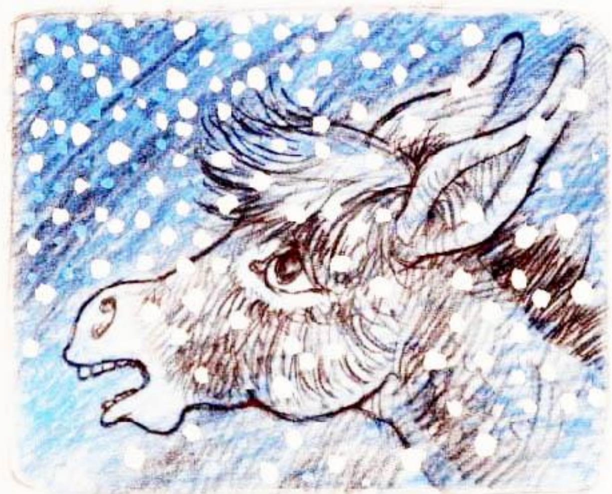
गधे के अपने कान पीछे किए. उसने कोई जवाब नहीं दिया.

जल्द ही कार्लो गर्म सेब के केक का सपना देखते हुए सो गया.



तभी उसकी नाक पर कुछ आकर छू गया. वो ठंडा था. उसने अपने सिर को दुबारा हिलाया. कुछ ठंडा और गीला उसके कान को छू गया. उसने दुबारा फिर से सिर हिलाया. उसने अपनी पलकें झपकाईं. आसमान से सफ़ेद कण (फ्लेक) गिर रहे थे. वे सफ़ेद पाउडर जैसे फ्लेक थे. उसने फिर से अपनी आँखें झपकीं. उसके बाद बड़े-बड़े गीले फ्लेक्स गिरे. हर जगह सफेद रंग था. बर्फ़बारी में सबकुछ गायब हो गया. गधा खुश होकर जोर से रेंका. फिर उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और बिल्कुल स्थिर खड़ा रहा. धीरे-धीरे हल्की बर्फ गिरी और उसके शरीर से चिपक गई.





जब गधा उठा तो हवा का झोंका चलना बंद हो गया था. उसने अपनी नाक खिड़की के शीशे से सटा दी. बाहर अभी भी अंधेरा था. वो खलिहान के दरवाजे पर गया और वहां सुनने लगा. वहां बहुत शांत था. वो बाहर गया. उसने हर तरफ बर्फ की तलाश की. गधा धीरे-धीरे बगीचे की ओर चला. वहाँ उसने अपना सिर अँधेरे आकाश की ओर उठाया और फिर प्रतीक्षा करने लगा.



घर में कार्लो बिस्तर से उठा. उसने लैंप जलाया, फिर उसने खिड़की के ठंडे कांच को रगड़ा.

"गधे, बर्फबारी हो रही है!"

उसे कोई जवाब नहीं मिला. कार्लो, गधे के कमरे में गया. लेकिन वहां कोई भी गधा नहीं था.

"गधे, तुम कहाँ हो?" कार्लो चिल्लाया.

"गधे, तुमने मेरी बात नहीं मानी. तुम तूफान में चले गए." कार्लो ने जल्दी से अपने जूते पहने.

"गधे, तुम बहुत जिद्दी हो," कार्लो ने अपना मोटा कोट पहना और अपनी ऊनी टोपी को कानों के ऊपर खींची. फिर वो बाहर अंधेरे में दौड़ा.



कार्लो ने मोटी बर्फ को पार किया. वो गेट तक पहुंचा.

"गधे, क्या तुम यहाँ हो?"

कार्लो ने बगीचे को पार किया. तभी गिरती बर्फ के बीच से उसने नाशपाती का पेड़ देखा. और पेड़ के नीचे उसका गधा खड़ा था. गधे ने ने बर्फ की सफेद चादर ओढ़ रखी थी. और उसके सिर पर उसके के बीच बर्फ की एक पहाड़ी उग आई थी.

गधा, कार्लो को देखकर मुस्कुराया.

अचानक कार्लो भूल गया कि वो कितने गुस्से में था.

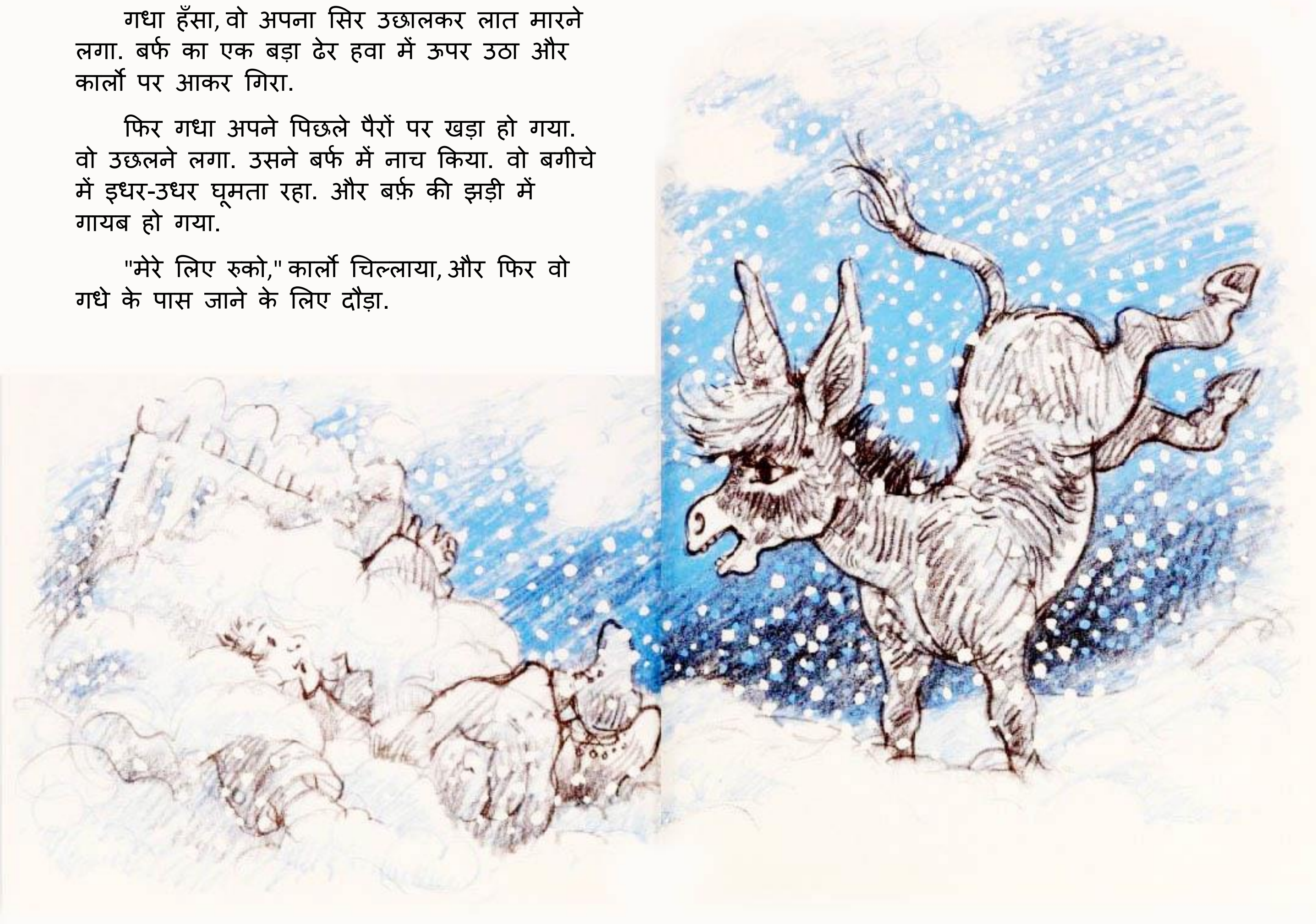
"तुम पूरी दुनिया में सबसे मज़ेदार गधे हो," उसने हँसते हुए कहा.



गधा हँसा, वो अपना सिर उछालकर लात मारने लगा. बर्फ का एक बड़ा ढेर हवा में ऊपर उठा और कार्लो पर आकर गिरा.

फिर गधा अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो गया. वो उछलने लगा. उसने बर्फ में नाच किया. वो बगीचे में इधर-उधर घूमता रहा. और बर्फ़ की झड़ी में गायब हो गया.

"मेरे लिए रुको," कार्लो चिल्लाया, और फिर वो गधे के पास जाने के लिए दौड़ा.



और जब वे खेल रहे थे, तब रात, दिन में बदल गई. कुछ चिकडी पक्षी, पत्ते-रहित पेड़ पर एकत्र हुए. नीली किरणें निकलीं. एक गिलहरी उन्हें देखने आई.

फिर बर्फबारी बंद हो गई. कार्लो ने गधे को अपने गले लगाया. उसने गधे के चेहरे से बर्फ हटा दी.

"मेरे गधे, अब हम रोज़ाना अपने बगीचे में आएंगे," कार्लो ने कहा, और उसने अपने दोस्त को फिर से गले लगाया.

"लेकिन अब," कार्लो ने पूछा, "क्या हम घर जा सकते हैं और सेब का केक बना सकते हैं?"

गधे ने सिर हिलाया.

फिर वे बर्फ से भरे बगीचे में से गुज़रते हुए घर की खिड़की की पीली चमक की ओर बढ़े.



अंत